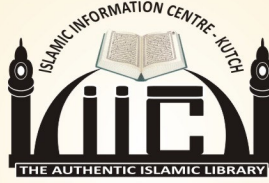


દીન કે તીન અહમ ઉસૂલ

શૈખુલ ઈસ્લામ મુહમ્મદ અત્તમીમી રહ.

ગુજરાતી લિપિયાંતર
મુહમ્મદ ફાઝલ ઉસ્માન ખત્રી
અશરફઅલી ઉસ્માન ખત્રી



ઈસ્લામિક ઈન્ફર્મેશન સેન્ટર

હોટલ નુરાની પાસે, ડાંડા બજાર, ભુજ - કચ્છ.

Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

दीन के तीन अहम उसूल

तालीफ़ : शैबुल इस्लाम मुहम्मद अत्तमीमी रह.

तम्हीद

कारिधने किराम अल्लाहतआला आप पर रहमत नाज़िल इरमाअे, ये आत अरुधी तरह उहन नशीन कर लीज़िअे के हम पर दर्श उैल आर मसाइल का इल्म हासिल करना वाज़िअ है.

(१) पेहला मस्अलह : हुसूले इल्म

यअनी अल्लाह तआला, उसके नबी (सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम) और दीने इस्लाम की मअूरिइत दलाइल के साथ हासिल करना.

(२) दूसरा मस्अलह : अमल

हासिल कईह इल्म पर अमल पेरा होना.

(३) तीसरा मस्अलह : दअ्पत

इस (दीने इस्लाम) की तरइ दअ्पत देना.

(४) चौथा मस्अलह : सअर व इस्तिआमत

दअ्पते दीन में आनेवाली मुश्किलात व मसाइल पर सअर व इस्तिआमत इफ्तियार करना और इन मसाइल की दलील अल्लाहतआला का ये इशाइ गिरामी है : “उमाने की कसम, इन्सान दरहकीकत असारे में है, सिवाअे उन लोगों के जो इमान लाअे और नेक अअ्माल करते रहे और अेक दूसरे को हक़ की नसीहत और सअर की तल्कीन करते रहे.” (सूरतुल अरर - १०३)

इमाम शाइइ रहमतुल्लाह अलेहि का इंस सूरह अरर के आरे में इशाइ है: “अगर अल्लाहतआला अपनी मअ्लूक पर अतौरे हुअ्जत सिई इसी अेक सूरह को नाज़िल इरमाते तो ये उनकी हिदायत के लिअे काई होती.”

और इमाम जुआरी रहमतुल्लाहि अलेहि ने (सहीह) जुआरी शरीइ में अेक आल की इफ्तियाअ अूं की है : कौल व अमल से कअ्ल हुसूले इल्म का अयान और उसकी दलील अल्लाहतआला का ये इशाइ है : “आन लीज़िअे के अल्लाहतआला के सिवा कौइ मअ्बूद नहीं और आप अपनी अता की मुआई मांगते रहीअे.” (सूरतुल मुहम्मद आयत - १८)

(इअदअ अिल इल्मी) युनांअे अल्लाहतआलाने इंस में कौल व अमल से पेहले इल्म का उिक़ किया है.

कारिधने किराम, अल्लाहतआला आप पर अपनी रहमतें नाज़िल इरमाअे, ये आत ली अरुधी तरह उहन नशीन करलें के मन्दरअह उैल तीन

मसाधल का एलम हासिल करना और उन पर अमल करना भी हर मुसलमान मर्द और औरत पर वाजिब है.

(१) पहला मसअलह :

अल्लाहतआलाने हमें पैदा किया, रिज़्क अता इरमाया और यूं ही हमें मुहम्मल नहीं छोडा बल्के हमारी तरफ़ अपना रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) भेजा, जिसने उनकी धताअत की वह जन्नती हो गया और जिसने उनके अहकाम से सतर्ताणी व सर्कशी की वह जहन्नमी हो गया और धसकी दलील अल्लाहतआला का ये धर्शाह है : “तुम लोगों के पास हमने धसी तरह अेक रसूल गवाह बनाकर भेजा है जिस तरह हमने क़िरऔन की तरफ़ अेक रसूल भेजा (क़िर ऐभ लो जब) क़िरऔनने उस रसूल की बात न मानी तो हमने उसको बडी सप्तती के साथ पकड लिया.”

(सूरतुल मुञ्जिबिमल आयत- १५,१५)

(२) दूसरा मसअलह :

अल्लाहतआला को ये बात कतअन् नागवार है के उसकी धबादत में उसके साथ किसी दूसरे को भी शरीक किया जाये, न किसी मुकर्रिब इरिशते को और न ही अल्लाहतआला की तरफ़ से किसी आनेवाले नबी को और धसकी दलील ये धर्शाह है : “और ये के मरिजहँ अल्लाह के लिअे हैं लिहाज़ा (धन में) अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो.” (सूरतुल जिन्न आयत- १८)

(३) तीसरा मसअलह :

जिसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की धताअत व इर्माबदर्री की और अल्लाहतआला की वहदानीयत व यक़्ताध को भी तस्लीम किया उसके लिअे ये हरगिज़ जाधज़ नहीं के वह अैसे लोगों से राह व रस्म और रिशतह व नातह रफ़्ते जो अल्लाहतआला और उसके रसूल के साथ दूश्मनी रफ़ते हों प्वाह वह दुन्यवी रिशतह के अेअ्तबार से कितना ही करीबी रिशतेहदार क्युं न हो !

धस बात की दलील अल्लाहतआला का ये धर्शाह है : “तुम कभी ये न पाओगे के जो लोग अल्लाह और आभिरत पर धमान रफ़नेवाले हैं वह उन लोगों से मुहब्बत करते हों जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुजालिफ़त की है प्वाह वह उनके आप हों या उनके धैटे या उनके भाध या उनके अहले भाण्डान, ये वह लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाहने धमान ख़ुत् कर दिया है और उन (के कुलूब) को अपने क़ैज़ से कुप्पत बफ़शी है, वह उनको अैसी जन्नतों में दाभिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वह हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी हुवा और वह अल्लाह से राज़ी हुअे, वह अल्लाह की जमाअत के लोग हैं, जबरदार रहो, अल्लाह की जमाअत वाले ही इलाह पानेवाले हैं.” (सूरतुल मुजादिलह आयत-२२)

कारिधने किराम, अल्लाहतआला अपनी धताअत व इर्माईरी की तरफ आपकी रहनुमाई करे, ये बात ली बजूबी समज ले के हनीकियत व भिल्लेते धबराहीमी ये हे के आप पूरे धप्लास के साथ सिई अेक अल्लाह की धबाएत करे, धसी काम का अल्लाहतआलाने तमाम लोगो को हुक्म दिया हे ओर धसी गरज के लिअे उन्हे पैदा इरमाया हे, जैसा के धशदि धलाही हे : “मैने जिन्न और धन्सानो को धसके सिवा किसी काम के लिअे पैदा नहीं किया हे के वह मेरी बंदगी करे.” (सूरतुल आरियात आयत- ५५)

(यअ्बुदून) के मअ्नी ये हे :

“मेरी वहदानीयत व यक़्ताई को दिल् व जान से कुबूल करे.”

अल्लाहतआलाने जिन् उमूर का हुक्म दिया हे उनमे सबसे अईअ व आअ्ला थीज “तोहीद” हे , जो हर किस्म की धबादात सिई अल्लाह वाहिद के लिअे बजा लाने का दूसरा नाम हे, ओर जिन् उमूर से अल्लाहतआलाने मनअ इरमाया हे उनमे सबसे बडा शिक है जो गेरुल्लाह को अपनी निदा व दुआ मे उसके साथ शामिल कर लेने का दूसरा नाम हे. धसकी दलील अल्लाहतआला का ये इरमाने गिरामी हे : “और तुम सब अल्लाहतआला की बंदगी करो और उसके साथ किसी को शरीक न बनाओ.” (सूरतुल निसा आयत- ३५)

दीन के तीन अहम उसूल

अगर आपसे ये पूछा जाअे के वह कोन से तीन उसूल हे जिन्की मअरिइत हासिल करना हर धन्सान पर वाजिब व जरूरी हे ? तो केह दीजिअे,

- (१) बंदे का अपने रब की मअरिइत हासिल करना.
- (२) अपने दीन की मअरिइत हासिल करना.
- (३) अपने नबी हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मअरिइत हासिल करना.

पेहला उसूल

अल्लाहतआला की मअरिइत :

अगर आपसे धस्तिइसार किया जाअे के आपका रब कोन हे ? तो आप केह दीजिअे के मेरा रब अल्लाह हे जिसने अपने इज्ज व करम से मेरी ओर तमाम जहानो की परवरिश की, वही मेरा मअ्बूद हे उसके सिवा मेरा दूसरा कोई मअ्बूद नहीं ओर उसकी रबूबीयत व परवरदिगारी की दलील ये धशदि गिरामी हे : “हर किस्म की तअरीफ अल्लाहतआला के लिअे हे जो तमाम जहानो का परवरिश करने ओर पालनेवाला हे.” (सूरतुल इातिहा आयत - १)

अल्लाहतआला की ऋतु बाबरकत के सिवा हर चीज आलम (जहान) है और मैं उस आलम (जहान) का अेक ईद हूं.

अगर आपसे ये सवाल किया जाये के आपने अपने रब को किस चीज के ऋतुये पहचाना ? तो केह दीजिये के उसकी आयात (निशानियों) और मज्लूकत के ऋतुये से पहचाना और उसकी निशानियों में से रात, दिन, सूरज और चांद का पखूद है और उसकी मज्लूकत में से सातों ऋतुओं और सातों आस्मान हैं और जो कुछ उन सब के अंदर और उनके मायेन है.

अल्लाहतआला की निशानियों की दलील उसका ये एशाद है : “अल्लाहतआला की निशानियों में से हैं ये रात और दिन और सूरज और चांद, सूरज और चांद को सजदह न करो बल्के उस अल्लाह को सजदह करो जिसने उन्हें पैदा किया है, अगर झील पाकिअ तुम उसीकी एबादत करने वाले हो.” (सूरतुल कुदिसलत आयत - 3७)

और उसकी मज्लूकत की दलील उसका ये इर्मान है : “दरहकीकत तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने आस्मानों और ऋतुओं को छे दिनों में पैदा किया और फिर अपने अर्शे बरी पर मुस्तवी हुवा, जो रात को दिन पर ढांक देता है और फिर दिन रात के पीछे दौडा चला आता है, जिसने सूरज, चांद और सितारे पैदा किये सब उसके इरमान के ताबिय हैं, जबरदार रहे उसीका भल्क है और उसीका अम्र है, बडा बाबरकत है अल्लाह सारे जहानों का मालिक व परवरदिगार.” (सूरतुल आअ्राइ आयत- ५४)

और रब्बे काएनात ही लाएके एबादत और मअ्बूदे बरहक है, उसकी दलील ये एशाद एलाही है : “लोगो ! अंदगी एफितयार करो अपने उस रब की जो तुम्हारा और तुमसे पेहले जो लोग गुजरे हैं, उन सब का मालिक है, अजब नहीं के तुम (दोऊभ से) बय जाओ, वही तो है जिसने तुम्हारे लिये ऋतुओं का इर्श बिछाया और आस्मान की छत बनाई और उपर से पानी बरसाया और उसके ऋतुये से हर तरह की पैदावार निकाल कर तुम्हारे लिये रिश्क बहम पहोंयाया, बस जब तुम ये जानते हो तो दुसरो को अल्लाह का मद्दे मुकाबिल न हेहराओ.” (सूरतुल बकरह आयत- २१,२२)

एमांम एब्ने कधीर रहमतुल्लाहि अलेहि ने एस आयत की तइसीर बयान करते हुये लिफ्हा है : “एन तमांम मअ्कूरह अश्या का मालिक (पैदा करनेवाला) ही हर किरम की एबादत का सहीह हक्कदार है.”

(तइसीर एब्ने कधीर :१:५७)

अइसामे एबादत :

अल्लाहतआलाने जिन अन्वाअ व अइसाम की एबादत को बजालाने का हुक्म दिया है मघलन इस्लाम, एमांन, एहसान और ऐसे ही दुआ व जोइ,

उम्मीद व रजाअ, तपक्कुल, रब्बत, र्हत (डर), जुशूअ, जशरय्यत, रुजूअ, धररतआनत, धररतआऱह (पनाह तलनी), धररतगाषह, ऱबह व कुर्बानी और नऱर व मन्नत और धनके धलावा और ली धबादते हैं जिनका अल्लाहतआलाने हुक्म दिया है और ये सब की सब अल्लाहतआला के साथ मजूस हैं.

धस बात की दलील ये धशरि धलाही है : “और ये के मरिजएँ अल्लाह के लरये हैं लरहाऱा धन में अल्लाह के साथ कसरि और को न पुकारे.”

(सूरतुल जर्रन आयत- १ॢ)

जसर कसरिने धन मऱ्कूरह बाला धबादत में से कसरि ली धबादत को कसरि गेरुल्लाह (इररशते, ननी, वली, पीर व मुशरिद) के लरये कसरि वह मुशररक व काकरि है और धसकी दलील ये धशरि रब्बानी है : “और जो कोर्र अल्लाह के साथ कसरि और मअ्बूद को पुकारे जसरके लरये उसके पास कोर्र दलील नहीं तो उसका हसरब उसके रब के पास है बेशक काकरि कली इलाह नहीं पा सकते.” (सूरतुल मुअ्मिनून आयत- ११७)

मऱ्कूरह अइसाम के धबादत होने के दलाधल :

• “दुआ” के धबादत होने की दलील, हदीषे पाक में ननीये अकूरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ये धशरि गिरामी है : “दुआ धबादत का मऱऱ (असल) है.” (तरररिऱी)

और कुअनि पाक में “दुआ” के धबादत होने की दलील ये इमरने रब्बानी है : “तुम्हारा रब केहता है के, “मुजे पुकारे में तुम्हारी दुआयें कुबूल करंगा जो लोग गमंड में आकर मेरी धबादत से मुंह मोदते हैं, ऱररर वह ऱलील व ऱवार हो कर जहन्नम में दाररल होंगे.” (सूरतुल गाकरि आयत- ॡ०)

• “जोइ” के धबादत होने की दलील ये धशरि धलाही है : “पस तुम धनसानों से न दरना बलके मुज से दरना अगर तुम हकीकत में साररिने धमान हो.” (सूरतुल आलरि धमरान आयत- १७५)

• “ उम्मीद व रजाअ” के धबादत होने की दलील ये आयते कुअनी है : “पस जो कोर्र अपने रब की मुलाकात का उम्मीदवार हो उसे याररये के नेक अमल करे और अंदगी में अपने रब के साथ कसरि और को शरीक न करे.” (सूरतुल कहइ आयत- ११०)

• “तपक्कुल” के धबादते धलाही होने की दलील ये इमरने धलाही है : “और अल्लाह पर बरोसा (तपक्कुल) रभ्जो अरग तुम मोमरन हो.” (सूरतुल मार्रदह आयत- २३)

कुअनि पाक के दूसरे अेक मकाम पर यूँ धशरि है : “और जो अल्लाह पर बरोसा करे तो अल्लाह उसके लरये काइ है.” (सूरतुल तलाक आयत- ३)

• “रज्जवत व रज्जवत ओर पुशूअ” के एभाएत होने की दलील ये इमनि
बारी तआला है : “ये लोग नेकी के कामों में दौड धूप करते थे और हमें रज्जवत
और जौफ़ के साथ पुकारते थे और हमारे आगे जूके हूअे थे.”

(सूरतुल अम्बिया आयत- ८०)

• “अशियत” के एभाएत होने की दलील ये एशति रज्जवानी है : “तुम
उन (आलिमों) से न दरो बल्के मुज से दरो.”

(सूरतुल बकरह आयत- १५०)

• “एनाबत व रुजूअ” के एभाएत होने की दलील ये आयत है : “और
पलट आओ अपने रज्ज की तरफ़ और मुतीअ बन जाओ उसके.”

(सूरतुल जुमर आयत- ५४)

• “एस्तिआनत” के एभाएत होने की दलील ये एशति एलाही है : “हम
तेरी ही एभाएत करते हैं और तुज ही से मदद मांगते हैं.”

(सूरतुल इतिहा आयत- ५)

हदीष शरीफ़ में “एस्तिआनत” के एभाएत होने के मुतअल्लिक ये एशति
रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक जेय्यीन दलील है : “जब
तुम मदद तलब करो तो अल्लाहतआला से तलब करो.”

(तिर्मिज़ी-हसन सहीह)

• “एस्तिआज़ह (पनाह तलबी)” के एभाएत होने की दलील ये आयते
कुर्बानी है : “कहो मैं पनाह मांगता हूँ एन्सानों के रज्ज, एन्सानों के बादशाह
(अल्लाह) की.” (सूरतुल नास आयत- १,२)

• “एस्तिगाषह” के एभाएत होने की दलील ये इमनि रज्जवानी है : “(उस
वक्त को याद करो) जब तुम अपने रज्ज से फ़रियाद कर रहे थे तो उसने तुम्हारी
फ़रियाद सुन ली.” (सूरतुल अन्ज़ाल आयत- ८)

• “ज़बह व कुर्बानी” के एभाएत होने की दलील ये आयते कुर्बानी है :
“कहो ! मेरी नमाज़, मेरे तमाम मरासिमे उबूदिय्यत (कुर्बानी) मेरा गुना
और मेरा मरना सब कुछ अल्लाह रज्जुल आलमीन के लिअे है जिसका कोई
शारीक नहीं और एसीका मुजे हुक्म दिया गया है और सब से पेहले सरे
एताअत जुकानेवाला मैं हूँ.” (सूरतुल अन्आम आयत- १५२,१५३)

और हदीषे पाक में एसकी दलील ये एशति रिसालते मआब सल्लल्लाहु
अलैहि व सल्लम है : “जिसने किसी गैरुल्लाह (नबी, पली, पीर व मुशिद,
साहिबे मज़ार) के तर्कुब के लिअे जानवर ज़बह किया, उस पर
अल्लाहतआलाने लअ्नत की है.” (सहीह मुस्लिम)

• “नज़र” के एभाएते एलाही होने की दलील ये एशति रज्जवानी है :

(ये वह लोग हैं) जो नज़र पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिसकी आज़त हर तरफ़ फैली हुई होगी.” (सूरतुल धन्सान (दहर) आयत- ७)

दूसरा उस्ल

दीने इस्लाम को दलायल के साथ जानना :

तोहीटे धलाही को दिल व जान से अपनाते हुअे अपने आपको अल्लाहतआलाके मुतीअ व सुपुर्द कर देने, उसके अह्काम की धताअत करते हुअे उसका ताभिअ इर्मान रेहने और उसके साथ किसी दूसरे को हर्गिज़ शरीक न ठेहराने का नाम “दीन” है.

दीन के तीन दरजात हैं :

- (१) इस्लाम.
- (२) इमान.
- (३) इहसान.

और इ़िर धन तीनों में से हर अेक दरजे के कुछ अर्कान हैं :

पेहला दरजह

इस्लाम और उसके पांच अर्कान :

- (१) धस जात की शहादत देना के अल्लाहतआला के सिवा कोय मअ्बूटे बरहक्क नहीं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं.
- (२) नमाज़ कायम करना.
- (३) झकात अदा करना.
- (४) रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रणना.
- (५) बैतुल्लाह शरीफ़ का हज्ज करना.

दलायले अर्काने इस्लाम

शहादते तौहीद :

शहादते तौहीद (अल्लाह तआला के मअ्बूट पह्दहु ला शरीकलह होने) की दलील ये धशटि धलाही है : “अल्लाहने षुद शहादत दी है के उसके सिवा कोय लायकि धबादत नहीं और (यही शहादत) सब इ़रिशतों और सब अहले इल्मने ली दी है, वह इन्साफ़ पर कायम है, उस झबरदस्त हकीम के सिवा

झील पाकिस्थ कोय लायकि र्णभादत नहीं.” (सूरतुल आलि र्णमरान आयत- १८)

शहादते तोहीद का मअनी ये है के अल्लाहतआला के सिवा कोय हकीकी मअबूद नहीं, “ला र्णलाह” में हर उस चीज की नई है जिसकी अल्लाहतआला के सिवा पूजा की जाती है और “र्णल्लाह” में सिई अेक अल्लाह के लिअे हर किस्म की र्णभादत का र्णब्नात है, उसकी र्णभादत में उसका कोय शरीक नहीं, बिल्कुल र्णसी तरह जैसा के उसकी बादशाही में उसका कोय शरीक और हिस्सेदार नहीं है.

र्णस शहादत की तइसीर व तशरीह अल्लाहतआला ही के र्णन इरामीन में पाकिअ तोर पर मौजूद है, र्णशादि रब्बानी है : “और याद करो वह वक़्त जब र्णबरहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बाप और अपनी कौम से कहा था, “तुम जिसकी बंरगी करते हो मेरा र्णनसे कोय तअल्लुक नहीं मेरा तअल्लुक सिई उससे है जिसने मुजे पैदा किया, वही मेरी रहनुमा र्ण करेगा और र्णबरहीम यही कलिमह (अकीदह) अपने पीछे अपनी औलाद में छोड गये ताके वह उसकी तरफ़ रुजूअ करें.” (सूरतुल जुफ़ुरु आयत- २६, २७, २८)

और इरमाने बारी तआला है : “आप इरमा दीजिये, अेय अेहले किताब ! आओ अेक अैसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान यक़्सां है, ये के हम अल्लाह के सिवा किसी की बंरगी न करें उसके साथ किसी को शरीक न ठेहराअें और हम में से कोय अल्लाह के सिवा किसी को रब न बना ले, र्णस दअ्पत को कुबूल करने से अगर वह मुंह मोडें तो साफ़ केह दीजिये के आप लोग गवाह रहो, हम तो मुस्लिम (सिई अल्लाह की बंरगी व र्णताअत करनेवाले) हैं.” (सूरतुल आलि र्णमरान आयत- ६४)

शहादते रिसालत :

र्णस बात की शहादत के हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के र्सूल हैं, (र्णस) की दलील ये र्णशादि र्णलाही है : “देओ तुम लोगों के पास अेक र्सूल आया है जो जुद तुम ही में से है, तुम्हारा नुकसान में पडना उस पर शाक है, तुम्हारी इलाह का वह भाहिश्मंद है, र्णमानवालों के लिअे वह बडा शईक और रहीम है.” (सूरतुल तौबाह आयत- १२८)

हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के र्सूलुल्लाह होने की शहादत देने के मअनी ये हैं के आपके अहकाम की र्णताअत की जाअे, आपने जो जबर ली दी है उसकी तस्टीक की जाअे, आपने जिन उमूर से रोका और मनअ किया है, उनसे कतर्ण र्णजतनाब किया जाअे और अल्लाहतआला की र्णभादत सिई मशरूअ तरीके ही से की जाअे.

नमाज, जकात और तइसीरे तौहीद की मुशतरकह दलील जालिके कार्णनात का ये र्णशादि है : “और उनको र्णसके सिवा कोय हुक्म नहीं दिया गया था के अल्लाह की बंरगी करें, अपने दीन को उसके लिअे जालिस कर के बिल्कुल

यक्षू हो कर और नमाज काईम करे और ञकात ई, यही निहायत सहीह व
दुरुस्त दीन है.” (सूरतुल बेय्यीनह आयत- प)

रमजानुल मुबारक के रोउं रभने की दलील ये एशटि रब्बानी है : “अय
लोगो ! जो एमानलाये हो तुम पर रोउं इर्र कर दीये गये जिस तरह तुम से
पेहले लोगो पर इर्र किये गये थे एस से तयक्कुअ है के तुम में तकवा की सिफ़त
पैदा होगी.” (सूरतुल बकरह आयत- १८३)

बेतुल्लाह शरीफ़ का हज्ज करणे की दलील ये इमनि एलाही है : “लोगो पर
अल्लाहतआला का ये हक्क है के जो एस घर तक पहुँचने की ताकत रभता हो
पह एसका हज्ज करे और जो कोएँ एस हुक्म की पैरवी से एन्कार करे तो उसे
मअलूम होना चाहिये के अल्लाह तमाम दुनियावालो से बेनियाज है.”

(सूरतुल आलि एमरान आयत- ८७)

दूसरा दरजह

एमान और उसके अर्कान :

एशटि नबपी है : “ एमान के सत्तर (७०) से ली कुछ ज्यादह शुअ्बे हें
जिन में से आअ्ला तरीन दरजह ला एलाह एल्लेलाह (अल्लाह के सिपा कोएँ
मअब्बूटे बर हक्क नहीं) केहना है और सब से अदना दरजये एमान रास्ते से
एजा व ऊरर रिसां चीजों (कांटे वगेरह) को हटाना है.” “और शर्म व हया ली
एमान का अेक शुअ्बह है.” (सहीह मुस्लिम)

एमान के छे (५) अर्कान हें :

- (१) अल्लाह पर एमान लाना.
- (२) उसके इरिशतो पर एमान लाना.
- (३) उसकी किताबों पर एमान लाना.
- (४) उसके रसूलों पर एमान लाना.
- (५) रोउं कयामत पर एमान लाना.
- (६) अरछी व बुरी तकदीर पर एमान लाना.

दलाएले अर्काने एमान

एमान के एन छे (५) अर्कान में से पेहले पांच की दलील अल्लाहतआला
का ये एशटि गिरामी है : “नेकी ये नहीं है के तुमने अपने येहरे मशिरक की
तरफ़ कर लिये या मशिरक की तरफ़ बलके नेकी ये है के आदमी अल्लाह पर और
योमे आभिरत पर और मलाएकह (इरिशतो) पर और अल्लाह की नाज़िल की

हूँ किताब और उसके पयगम्बरों पर धमान व यकीन रखे।”

(सूरतुल बकरह आयत - १७७)

और छोड़े रुकून “तकदीरे जेर व शर” या अरुधी व जूरी तकदीर, धसकी दलील ये इमनि धलाही है : “हमने हर चीज़ अेक तकदीर के साथ पैदा की है।” (सूरतुल कमर आयत - ४८)

तीसरा दरजह

धहसान :

धहसान का अेक ही रुकून है के आप अल्लाहतआला की धबादत (धस जुशूअ व जुजूअ और धनामत व रुजूअ से) करे के गोया आप उसे बयश्मे जुद देज रहे हैं और अगर आप धस मकाम को नहीं पा सकते के आप देज रहे हैं तो कम अरू कम ये आलम तो झरूर ही होना चाहिये के वह आपको देज रहा है।

दलाधले धहसान

धहसान के कुआनी दलाधल ये आयते मुबारकह हैं :

“अल्लाह उन लोगों के साथ है जो तकवा से काम लेते हैं और जो ‘धबादतों को’ अरुधी तरह करते हैं।” (सूरतुल नहल आयत- १२८)

दीगर इमनि धलाही है : “और उस झबरदस्त और रहीम पर तपक्कुल रभिये जो आपको उस वक्त देज रहा होता है जब आप उठते हैं और सजदह गुजार लोगों में आपकी नकूल व हर्कत पर निगाह रभता है, वह सब कुछ सुननेवाला और जाननेवाला है।”

(सूरतुल शुअ्राअ आयत- २१७ से २२०)

मऊीद धशादि रब्बानी है : “अय नबी ! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप जिस हाल में ली होते हों और कुआन में से जो कुछ ली सुनाते हों और लोगो ! तुम ली जो कुछ करते हो उस सब के दौरान में, हम तुमको देजते रेहते हैं।” (सूरतुल यूनुस आयत- ५१)

और दीन के धन तीन दरजात पर सुन्नत से दलील नबीअे अकूरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ये मशूर हदीष है जो हदीषे जिबरधल (अलैहिस्सलाम) के नाम से मअरूफ है। “हजरत उमर (फ़ा़क) धिन जत्ताब रदियल्लाहु अन्हुु बयान करते हैं के हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे थे के अयानक अेक अैसा आदमी हमारी मजलिस में पारिद हुआ जिसके कपडे निहायत सफ़ेद और बाल धिन्तहाध सियाह थे, उस

पर सफ़र कर के आने की कोशिश अलामत(गर्भ गुबार और परागंघी) न थी और हम में से कोई उसको जानता भी नहीं था, वह नबीअे अक़्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने आप के गुटनों से गुटने मिला कर और अपने हाथ अपनी रानों पर रख कर दो खानों हो कर बाअदब तरीके से बैठ गया और उसने कहा के अय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे बताइये के इस्लाम क्या है ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरमाया, इस्लाम ये है के आप इस बात की गवाही दें के अल्लाह के सिवा कोई मअ्बूदे बरहक़क़ नहीं और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के सच्ये रसूल हैं और ये के आप नमाज़ काइम करें, झकात अदा करें, रमज़ानुल मुबारक के रोझे रफ़्में और अगर झादे राह की इस्तिताअत हो तो बैतुल्लाह शरीफ़ का हज़्ज करें, उस नौवारिद ने कहा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने सय इरमाया है, हम उसकी इस बात पर मुतअश्ज़िब हूअे के पेहले तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सवाल करता है इर भुद ही तस्दीक़ ली कर रहा है, इसके बअ्द उसने कहा मुझे बताइये के इमान क्या है ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने इरमाया, इमान ये है के आप अल्लाहतआला, उसके इरिशतों, उसकी क़िताबों, उसके रसूलों, रोझे क़्यामत और तकदीरे जैर व शर पर मुक़म्मिल इमान रफ़्में, तब उसने कहा मुझे बताअें के इहसान क्या है ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने इरशाद इरमाया इहसान ये है के आप अल्लाहतआला की इबादत इस भुशूअ व भुशूअ और इनाअत व दुशूअ से करें के गोया आप उसे बयश्मे भुद देभ रहे हैं और अगर आप इस रुतबे भुलंद को नहीं पा सकते तो कम अक् कम ये आलम तो झरूर ही होना चाहिये के वह (अल्लाहतआला) आपको देभ रहा है तो उसने कहा मुझे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ये बताअें के क़्यामत कब आनेवाली है ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इरमाया जिस से सवाल क़िया जा रहा है वह पुक्कूअे क़्यामत के बारे में सवाल करनेवाले से ख़्यादह नहीं जानता तो उसने कहा अलामाते क़्यामत ही बता दें, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इरमाया : “लौडी अपने आका को जन्म देगी और आप देभेंगे के नंगे पाअों नंगे बदन लेड-बक़रियां चराते इरनेवाले लोग बडी-बडी इमारतों बनाने में इफ़्र करेंगे.”

हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु केहते हैं के इतनी बातें करने और सुन लेने के बअ्द वह नौवारिद तो चला गया मगर हम थोडी देर तक सरासीमह (हैरान, परेशान) व ज़ामोश बैठे रहे, तब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इरमाया : “अय उमर (रदियल्लाहु तआला अन्हु) क्या आप जानते हैं के ये नौवारिद साइल कौन था ?” हमने कहा अल्लाह और उसके रसूल ही ख़्यादह बेहतर जानते हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

मताया के ये जिबरहले अमीन थे जो अेक अजमनी की शकल में तुम्हें उमूरे दीन की तअलीम देने आये थे.” (सहीह बुजारी, सहीह मुस्लिम)

तीसरा उसूल

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मअरिफत :

आपका नाम नामी एस्मे गिरामी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम है, बनी हाशिम कबीलह कुरैश से और कुरैश अरब से और अरब हजरत एस्माएल बिन एबराहीम जलीलुल्लाह अलैहिमा व अला नबीय्यीना अक्खलुस्सलातु वरसलाम की ओलाद से हैं.

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने जुमलह तिरसठ (५३) बरस उमर शरीफ पाए जिन में से चालिस बरस बिअ्थत व नबुप्पत से पेहले और तेईस (२३) साल जहैषियत नबी व रसूल गुजारे. आपकी जाये पैदाएश मक्का मुकर्रमह है.

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गुजूले, (एकर'अ बिस्मी रब्बीकल्लज़ी ज-ल-क. सूरतुल अलक आयत-१) के साथ शई नबूप्पत हासिल हूँ और गुजूले (या अय्युहल मुद्दएषीर कुम इ-अन्नीर. सूरतुल मुद्दएषीर - आयत १, २) के साथ बारे रिसालत से मुशर्रफ हुअे, अल्लाहतआलाने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शिक से डराने और तोहीट की दअ्पत देने के लिअे मज्जीब इरमाया, एस जात की दलील ये एशाएि बारी तआला है : “अेय औड लपेट कर लेटनेवाले उठो, और जबरदार करो, और अपने रब की बडाए का अैलान करो, और अपने कपडे पाक रज्जो, और गंदगी से दूर रहो, और एहसान न करो ख्यादह हासिल करने के लिअे, और अपने रब की जातिर सबर करो.”

(सूरतुल मुद्दएषीर आयत - १ से ७)

शई मुइरदात :

• **(कुम इ-अन्नीर)** आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एन लोगो को शिक से डराअे और तोहीट की तरफ दअ्पत दें. (सूरतुल मुद्दएषीर आयत- २)

• **(वरब्बक इकब्बीर)** तोहीट के साथ अल्लाहतआला की अज्मत बयान करें. (सूरतुल मुद्दएषीर आयत- ३)

• **(वधीयाबक इतहहीर)** अपने अज्माल को शिक से पाक करें. (सूरतुल मुद्दएषीर आयत- ४)

• **(वरइज-अ इहुर)** “अरइज-अ” का मअ्नी अस्नाम (जुत) और

“इहजुर” (एन से हिजरत कर) का मतलब ये है के जिस तरह अब तक आप एन से दूर रहे हैं एसी तरह एनके बनाने और पूजनेवालों से दूर रहें और एन अस्नाम और एनके परस्तार मुशिरकों से बेजारी व बराअत का एख्तार करें.

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने एस अहम बुनियाटी नुकते पर एस साल सई किये और लोगों को तौहीद की तरफ् एख्तत देते रहे, एस साल के बख्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आस्मानों की सैर (मिअराज) कराए गए और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पंजगाना नमाज् इर्क की गए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन साल तक मक्का मुकर्रमह में नमाज् अदा करते रहे, एसके बख्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मदीनह मुनप्परह की तरफ् हिजरत कर जाने का हुक्म मिल गया. और बलदे शिर्क से बलदे एस्लाम की तरफ् मुन्तकिल हो जाने का नाम हिजरत है. और ये बलदे शिर्क से बलदे एस्लाम की तरफ् हिजरत और नकले मकानी करना एस उम्मेते मुहम्मदियह पर इर्क है और ये इरीजह कयामत तक बाकी है, एस बात की दलील ये इमराने एलाही है : “जो लोग अपनी नफ्स पर खुल्म कर रहे थे, उनकी इहेँ जब इरिशतोंने कब्ज की तो उनसे पूछा के ये तुम किस हाल में मुबतला थे, उन्होंने जवाब दिया के हम जमीन में कम्जोर और मजबूर थे, इरिशतोंने कहा, “क्या अल्लाहतआला की जमीन पसीअ न थी के तुम उस में हिजरत करते.” ये वह लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वह बडा ही बुरा ठिकाना है, हां जो मर्द-औरतें और बख्ये पाकए बेबस हैं और निकलने का कोए रास्ता और खरिअह नहीं पाते, बएद नहीं के अल्लाह उन्हें मुआफ़ कर दे, अल्लाह बडा मुआफ़ करनेवाला और दरगुजर इरमानेवाला है.” (सूरतुल निसा आयात- ८७ से ८८)

दीगर एशदि बारी तआला : “अेय मेरे बंदों ! जो एमान लाये हो, मेरी जमीन पसीअ है पस तुम मेरी ही बंदगी बज लाओ.”

(सूरतुल अन्कबूत आयत- ५५)

एमाम बग्वी रहमतुल्लाह अलैहि ने एस आयत के शाने नुखूल के बारे में कहा है : “ये आयत उन मुसलमानों के बारे में नाखिल हूँ जो मक्का शरीफ़ में रह गये और जिन्होंने हिजरत न की, अल्लाहतआलाने उन्हें एमान के नाम से निदा दी और पुकारा है.”

हदीष से हिजरत की दलील रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ये एशदि गिरामी है : “जब तक तौबह का दरवाजह बंद नहीं हो जाता तब तक हिजरत का सिल्सिलह मुन्कतअ नहीं होगा जब के तौबह का दरवाजह उस पक़्त तक बंद नहीं होगा जब तक के सूरज मग़्रिब से तुलूअ (रोझे कयामत) नहीं होता.” (अबूदापूद-सहीह)

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने मदीनह मुनप्परह में अपने कदम

जून जमा लिये तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बकियह अह्काम व शाराय्ने इस्लाम मफलन ञ्कत, रोञह, हज्ज, अञान, जिहाद, अन्न भिल् मअरूक् ओर नही अनिल मुन्कर का हुक्म दिया गया ओर एन उमूर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने दस बरस गुञारे तब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने पञत पाय मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दीन कयामत तक बाकी रहेगा.

दीने इस्लाम और शरीअते मुहम्मदियह का जुलासा

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दीन (मुफ्तसर मगर जामिअ व मानिअ जुलासह) ये है :

बलाय का कोय ऐसा काम नहीं के आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने उम्मत को उसकी इत्तिलाअ न की हो ओर बुराय का कोय काम ऐसा नहीं के जिस से उम्मत को मुतनब्बह न किया हो.

जिस बलाय की तरक् आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने रहनुमाय इरमाय है, वह तोहीदे बारी तआला ओर हर वह काम है जिसे अल्लाहतआला पसंद करता है ओर जो उसकी रिञा के हुसूल का ञरीअह है. ओर जिस बुराय से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने रोका ओर मुतनब्बह किया वह शिर्क ओर हर वह काम है जिसे अल्लाहतआला नापसंद करता है ओर बुरा समजता है.

अल्लाहतआलाने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पूरी इन्सानियत (तमाम लोगों) की तरक् मबुध किया ओर हर दो आलम जिन्न व इन्स पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत व इर्माबदारी इर्क करार दी है, इंस बात की दलील ये इशादि बारी तआला है : “(अय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप केह दीजिये अय इन्सानों ! मैं तुम सब (इन्सानों) की तरक् अल्लाह का पयगम्बर हूं.” (सूरतुल आअ्राइ आयत- १प८)

अल्लाहतआलाने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दीने इस्लाम की तक्मील की (दीन व दुनिया के तमाम मसाइल का हल पेश किया ओर उस में किसी किस्म की कोय तिशनगी ओर कमी बाकी नहीं छोडी) जिसकी दलील ये इमनि इलाही है : “आज मैंने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिये मुकम्मिल कर दिया है ओर अपनी निअ्मत तुम पर तमाम कर दी है ओर तुम्हारे लिये इस्लाम को तुम्हारे दीन की हेचीयत से कुबूल कर लिया है.” (सूरतुल मायदह आयत- 3)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंस दुनिया से पञत पा जाने की दलील कुअनि पाक में अल्लाहतआला का ये इशादि है : “अय नबी ! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप को ली मरना है ओर इन लोगों को ली

मरना है, आभिर कार क्यामत के रोऊ तुम सभ अपने रब के हुजूर अपना-अपना मुकद्दमा पेश करोगे.” (सूरतुल जुमर आयत-30,39)

तमाम लोग मरने के बअद (रोऊ महशर जऊा व सऊा के लिये) दोबारह उठाये जायेंगे, जिसकी दलील ये एशदि एलाही है : “एसी ऋमीन से हमने तुमको पैदा किया है और एसी में हम तुम्हें वापस ले जायेंगे और एसी से तुमको दोबारह निकालेंगे.” (सूरतुल ताहा आयत- 55)

और ये एशदि रब्बानी ली बअष बाअदुल मोत की दलीले कातिअ है : “और अल्लाहने तुमको ऋमीन से भास तौर से पैदा किया फिर वह तुम्हें एसी ऋमीन में वापस ले जायेगा और (क्यामत के रोऊ फिर एसी ऋमीन से) तुमको थकायक निकाल भडा करेगा.” (सूरतुल नूह आयत- 17, 18)

दोबारा उठाये जाने के बअद लोगों से हिसाब किताब लिया जायेगा और उनके अअ्माल (हसनह व सथियअह) के मुताबिक उन्हें जऊा व सऊा दी जायेगी, जिसकी दलील ये इमराने बारी तआला है : “और ऋमीन और आस्मानों की हर चीज का मालिक अल्लाह ही है ताके अल्लाह बुराई करने वालों को उनके अमल का बदला दे और उन लोगों को अच्छी जऊा से नपाके जिन्होंने नेक रयेया एफितयार किया है.” (सूरतुल नज्म आयत- 39)

जिसने (बअष बाअदुल मोत) मरने के बअद दोबारह उठाये जाने का एन्कार किया वह काफिर हो गया जिसकी दलील ये एशदि रब्बानी है : “काफिरोंने बडे दअ्पे से कहा है के वह मरने के बअद दोबारह हर्गिज नहीं उठाये जायेंगे, उनसे कहो नहीं मेरे रब की कसम तुम ऋदर उठाये जाओगे फिर ऋदर तुम्हें बताया जायेगा के तुमने (दुनिया में) क्या कुछ किया है और ऐसा करना अल्लाह के लिये बहुत आसान है.” (सूरतुल तगाबुन आयत - 7)

अल्लाहतआलाने तमाम रसूलों को (नएमे जन्नत की) बशाारत देने और (अऊाबे जहन्नम) से डरानेवाले बना कर भेजा था, जिसकी दलील ये इमराने एलाही है : “ये सारे रसूल भुशभबरी देनेवाले और डरानेवाले बना कर भेजे गये थे ताके एनको मबउीष कर देने के बअद लोगों के पास अल्लाह के मुकाबले में कोई उरर बाकी न रहे.” (सूरतुल निसा आयत - 155)

रसूलों में से सभ से पेहले रसूल हऊरत नूह अलैहिस्सलाम और सभ से आभरी रसूल हऊरत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भातमुन्नबीय्यीन हैं, हऊरत नूह अलैहिस्सलाम के पेहले रसूल (न के पेहले नबी) होने की दलील ये एशदि एलाही है : “अथ नबी ! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ एसी तरह वही भेजा है जिस तरह नूह (अलैहिस्सलाम) और उनके बअद के पयगम्बरों की तरफ़ भेजा थी.” (सूरतुल निसाअ आयत - 153)

हर उम्मत की तरफ़ अल्लाहतआलाने हज़रत नूह अलेहिस्सलाम से लेकर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम तक रसूल भेजे हैं जो अपने उम्मतियों को अल्लाहतआला की एजाएत का हुक्म देते और “तागूत” की एजाएत से मनअ करते चले आये हैं, जिसकी दलील ये एशादि एलाही है : “हमने हर उम्मत में एक रसूल भेज दिया और उसके ऋीअे सब को जबरदार कर दिया के ‘अल्लाह’ की बंदगी करो और ‘तागूत’ की बंदगी से बचो.” (सूरतुल नह्ल आयत - 35)

अल्लाहतआलाने तमाम बंटों (जिन्न व एन्स) पर “तागूत” का एन्कार व कुदर और अल्लाह पर एमान लाना इर्ज़ करार दिया है, एमाम एब्ने कैय्यीम रहमतुल्लाह अलेहि “तागूत” की तअरीफ़ जयान करते हूअे केहते हैं :

“जिस किसी भी जातिल मअबूद (जिस गेरुल्लाह की एजाएत की जाअे) या मत्बूअ (जिस की ऐसे उमूर में एत्तजाअ की जाअे जिन में अल्लाहतआला की मअसियत हो) या मुताअ (जिस की एताअत उमूरे हिल्लत व हुर्मत में एस तरह की जाअे के जिस में इराभीने एलाही की मुजालिफ़त हो) की वजह से बंटा अपनी हुदूए बंदगी (जालिस एजाएते एलाही) से तजवुज़ कर जाअे वही चीज़ “तागूत” है और तागूत तो जेशुमार हैं मगर एनके सरबर आपर्दह पांय हैं :

- (१) एबलीसे लएन.
- (२) ऐसा शअ्स जिस की एजाएत की जाअे और वह एस इएअ्ल पर रज़ामंड हो.
- (३) जो शअ्स लोगों को अपनी एजाएत करने की दअ्पत देता हो.
- (४) जो शअ्स एल्मे गेब जानने का दअ्पा करता हो.
- (५) जो शअ्स अल्लाहतआला की नाज़िल की हूए शरीअत के जिलाइ इऐसला करे.

और एस जात की दलील ये एशादि जारी तआला है : “दीन के मुआमले में कोए और जबरदस्ती नहीं है कयुंके हिदायत यकिनन गुमराही से मुम्ताज़ हो चुकी है, अब जो कोए “तागूत” का एन्कार कर के अल्लाह पर एमान ले आया, उसने एक ऐसा मअबूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं है और अल्लाह सब कुछ सुननेवाला और जाननेवाला है.”

(सूरतुल बकरह आयत- २५५)

यही ला एलाहा एल्लल्लाह (अल्लाह के सिवा कोए मअबूदे बर् हक्क नहीं) का सहीह मइहूम व मअनी है.

हदीचे पाक में रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम का एशादि है : “एस दीन की असल चीज़ “एस्लाम” है और एस का सुतून नमाज़ है और एसका आअ्ला तरीन मर्तबह व मकाम जिहाद इी सबीलिद्लाह है.”

(तबरानी कबीर, एसे सूयूतीने जामिअस्सगीर में सहीह कहा है और एमाम मनापीने अपनी शरहमें हसन कहा है.) पल्लाहु अअ्लम.